485
H 103 P
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1313/1017

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 485

19-1

123

॥ ओ३म् ॥

क्रान्ति-भजनावली

संग्रहकर्ता:—

महाशय नन्दलाल आर्य्य,

आर्य्य भजनोपदेशक, गाजीपुर सिटी।

प्रकाशक:—

प्रभूदयाल आर्य्य।

पुस्तक मिलने का पता:—आर्य्य समाज, गाजीपुर।

प्रथम बार २०००] [मूल्य)॥

491.431
L15K

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 485
Date 11.12.71
GOVT. OF INDIA

169

प्रार्थना

यही है आरजू भगवन् मेरा जीवन यह आला हो।
परुपकारी, सदाचारी व लम्बी उमर वाला हो॥
सरलता, शीलता एकता हो भूषण मेरे जीवन के।
सचाई सादगी श्रद्धा के मन सांचे मेंढाला हो॥
तजूं छल, झूट, चालाकी, बनूं सत्संग अनुरागी।
गुनाहों और खताओं से मेरा जीवन निराला हो॥
तेरी भक्ती में ओ भगवन् लगादूं अपना मैं तनमन॥
दिखावे के लिये हाथों में थैली हो, न माला हो॥
मेरा वेदोक्त हो जीवन, कहाऊं धर्म अनुरागी।
रहूं आज्ञा में वेदों की, न हुक्मे वेद टाला हो॥
तजूं सब खोटे भावों को तजूं सब वासनाओं को।
तेरे विज्ञान दीपक का मेरे मन में उजाला हो॥
सदाचारी रहूं हरदम बुराई दूर हो मन से।
क्रोध औंर कामने मुझ पर न जादू कोई डाला हो॥
मुसीबत हो कि राहत हो रहूं हर हाल में साबिर।
न घबराऊं न पछताऊं न कुछ फरयादो नाला हो॥
पिलादे मोक्ष की घुट्टी मरन जीवन से हो छुट्टी।
विनय अन्तिम यह अर्जुन की अगर मंजूरे वाला हो॥

(२)

शरण प्रभू की आवो रे यही समय है प्यारे ।
छल कपट और झूठ को त्यागो सत्य में चित्त लगावो रे ॥
उदय हुआ ओम् नाम का भानु, आवो दर्शन पावोरे ।
पान करो इस अमृत फल को उत्तम पदवी पावो रे ॥
हरि की भक्ति विना नहीं मुक्ति दृढ़ विश्वास जमावो रे ।
मनुष्य जन्म अमोलक है यह बृथा न इसको गंवावो रे ॥
करलो नाम हरि का सिमरन अन्त को न पछतावो रे ।
धन्य दया जो सब को पाले मत उसको बिसराओ रे ॥
छोटे बड़े सब मिलकर खुशी से गुण ईश्वर के गावो रे ।

(३)

अजब हैरान हूं भगवन, तुझे क्यों कर रिझाऊं मैं ।
कोई वस्तु नहीं ऐसी, जिसे सेवा में लाऊं मैं ॥
करूं मैं किस तरह आह्वान, कि तुम मौजूद हो हरजा ।
निरादर है बुलाने को, अगर घन्टी हिलाऊं मैं ॥
तुम्हीं हो मूर्ति में भी, तुम्हीं व्यापक हो फूलों में ।
भला भगवन को भगवान पर कैसे चढ़ाऊं मैं ॥
लगाना भोग कुछ तुम को, यह इक अपमान करना है ।
खिलाता है जो सब जग को उसे कैसे खिलाऊं मैं ॥
तुम्हारी ज्योति से रोशन, हैं सूर्य चान्द और तारे ।
महा अन्धेर है तुमको अगर दीपक दिखाऊं मैं ॥

भुजाएं हैं न सीना हैं न गर्दन है न पेशानी ।
तू है निर्लेप नारायण कहां चन्दन लगाऊं मैं ॥

(४)

टेक-हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिये ।
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिये ॥
ऐसी कृपा और अनुग्रह हम पै हो परमात्मा ।
हों सभासद इस सभा के सब के सब धर्मात्मा ॥
हो उजाला सबके मन में ज्ञान के प्रकाश से,
और अन्धेरा दूर सारा हो अविद्या नाश से ॥२॥
खोटे कर्मों से बचें और तेरे गुण गावें सभी ।
छूट जावें दुख सारे, सुख सदा पावें सभी ॥२॥
सारी विद्याओं को सीखें ज्ञान से भरपूर हों ।
शुभ कर्म्म में होवें तत्पर, दुष्ट गुण सब दूर हो ॥४॥
यज्ञ हवन से हो सुगन्धित, अपना भारतवर्ष देश ।
वायु जल सुखदायी होवे, जावें मिट सारे क्लेश ॥५॥
वेद के प्रचार में, होवे सभी पुरुषार्थी ।
होवे आपस में प्रीति, और बने परमार्थी ॥६॥
लोभी और कामी क्रोधी, कोई भी हम में नहो ।
सब व्यसनों से बचें, और छोड़ देवें मोह को ॥७॥
अच्छी सङ्गत में रहें, और वेद मार्ग पर चलें ।
तेरे ही होवें उपासक. और कुकर्मो से बचें ॥८॥

कीजिये "केवल" का हृदय शुद्ध अपने ज्ञान से।
मान भक्तों में बढ़ाओ सब का भक्ति दान से॥६॥

(५)

शरण अपनी में रख लीजे दयामय ! दास हूं तेरा।
तुम्हें तजकर कहाँ जाऊं हितू को और है मेरा॥
भटकता हूं मैं मुद्दत से नहीं विश्राम पाता हूं।
दया की दृष्टि से देखो नहीं तो डूबता बेड़ा॥
सताया रागद्वेषों का तपाया तीन तापों का।
दुखाया जन्म मृत्यु का हुआ तंग हाल है मेरा॥
दीन दुख मेटने वाला तुम्हारा नाम सुनकर मैं।
शरण में आगिरा अबतो भरोसा नाथ है तेरा॥
मुझे पुरुषार्थ दे स्वामी है केवल आस अब तेरी।
दया "बलदेव" पर करके बनाले नाथ निज चेरा॥

(६)

समय है अब तो मति चूको रे भाई॥
पहली चूक हुई जिस दिन कोई मुगल बादशाह आया था
सौ सौ गउवों का गोल लश्कर के आगे लाया था
आपने अपना धर्म समझ गउवों का प्राण बचाया था।
यानी अपना शस्त्र गउवों की तरफ नहीं हां चलाया था
गउ देख कर नहीं हटते तो आज गऊ घट जाती क्यों

सौ सौ की जगह नित्य सत्तर हजार कट जाती क्यों
उन के हड्डी चमड़ों से भारत भूमि पट जाती क्यों
सुन करके डडकार उनकी ये छाती भी फट जाती क्यों
वही आपकी भूल आप को ही रही दुखदाई ॥समय है०॥

दूसरी चूक बीरबल से जब अकबर ने फरमाया था
हिन्दू होने के लिये हर बार सवाल उठाया था
मगर बीरबल की बुद्धी में ऐसा खपत समाया था
एक महा गंदी मिसाल दे अकबर को बिसराया था
अगर बीरबल न चूकते तो क्यों इतनी हानी होती
इस हिन्दू कौम के संग भाई क्यों हरकत हैवानी होती
अकबर हीन्दू हो जाता तो कहां मुसलमानी होती
कुरान ही मिट जाता तो फिर किस की कुर्बानी होती।
जो कुरान रहा इस दुनियां में तो झगड़े फैलाई ॥समय॥

यदि बीरबल न चूकते तो आती आज तवाही क्यों
इस हिन्दू रूप वगीचे की यह देती दशा दिखाई क्यों
जैसा बगीचा था भारत वैसा अब कौन लगावे गा
जिस तरह लुटा बेदरदी से ऐसा अब कौन लुटायेगा
क्या फूल कली बेल और बूटे क्या फल पत्ते जगह कुरेदी
जड़ कुचली और नहर अटादी, नहर अटादी पटरी ढादी
आवादी से कर वरवादी बुल बुल पकड़े मोर मार दिये
तोते पकड़ कर पार उतार दिये।
मालिन पीटी माली पकड़े कच्चे वच्चे और जन बच्चे

बर्छे बर्से खून बहा दिये पुस्तक फूंकी मुंह में थूके
मां और बेटा बहिन और भाई बाप और बेटी नंगे देखे
रंगीन चूना किया खून में सर हिन्द बसी खड़ी है अबतक
दिवार देखो जिसके अन्दर जोटकी जोट लगी लालोंकी क्याकोई
छंद बनावेगा क्या सुनने वाला सुने बैठ क्या गाने वाला गायेगा
है वार २ धिकार उसे जो शुद्धि में ईंट लुभावेगा
तेजसिंह बस अब मत चूको यही है चतुराई ॥समय॥

(७)

झूठ जो चीज है फिर उससे मुहब्बत कैसी
खाक हो जाय जो दमभर में वो सूरत कैसी
रंग लायेगी जो कुछ दिन में वो हालत कैसी
जिन गुलों पर है खिज़ा उनको वो रंगत कैसी
जो डुबो दे तुम्हें मझधार वा सोहबत कैसी
नर्क लेजाय जो इन्सां को वो दौलत कैसी
चीज अपनी अगर छिनजाय तो कुव्वत कैसी
आखिरी वक्त में देरी हो तो कुरबत कैसी
जिसके पर्दे में मुसीबत हो वो राहत कैसी
खुद ही फूंका जिसे उससे कहो उल्फत कैसी
दिल में परहेज की बू है तो इतायत कैसी
कहीं तस्वीर कहीं दिल है तो इबादत कैसी
मेरा तेरा यह बखेड़ा है कहे राधेश्याम
मौत जब सर पर खड़ी है तो सकूनत कैसी ॥

(८)

अति निकट विकट संकट का तट सिर पर है
परवाह नहीं जब रक्षक जगदीश्वर है
घन घोर घटा वर्षा की लगी झड़ी हो
आंधी प्रचंड सर्दी या धूप कड़ी हो
मुंह खोल मृत्यु खाने के लिये खड़ी हो
रिपुसेना सर पर डेरा डाल पड़ी हो
यद्यपि दहाड़ता सम्मुख शेर ववर है ॥परवाह॥
चाहे कोई गोली गोले बरसाले
तलवार तवर बर्छी भाले चमकाले
बिशधर भुजंग बैठे हों जीभ निकाले
पीछे घोड़े हाथी वलिष्ट मतवाले
यदि रूठ जाये संसार सकल क्या डर है ॥परवाह॥
चाहे कोई धन धाम ग्राम भी लूटे
सुन मात तात युवती से नाता टूटे
यह सुर दुर्लभ मानव जीवन घट फूटें
प्रियवर प्रकाश पर प्रेम पथ नहीं छूटे
यह वचन किसी कवि का कितना मृदुकर है ॥परवाह॥

(९)

नकुवों ने कैसी नाक बढ़ाई है।
किसी समय में इस भारत पर बुरा जमाना आया था

यानी दुष्ट म्लेच्छों ने इसको दिन रात सतायाथा
तो फिर पंडित काशीनाथ ने ऐसा मता उपाया था।
शीघ्र बोध शीघ्र बना हिन्दुओं का धर्म बचया था
लेकिन अब नकुओं ने एक नक्कू पंथ चलाया है
जिससे पंडित काशी नाथ को भी नीचा दिखलाया है
यानी जोकुछ लिखा उन्होंने उसको भी विसराया है।
गर्भ तलक की कन्याओं को कर विधवा बिठलाया है
व्याह करोगे नाक कटेगी यह दहसत भी दिखलाई है ॥नकुवों॥
नाक भी न कटी इनकी कन्या का मोल सुनाने से
घोड़ा आदि पशुओं की तरह नित वेंच २ कर खाने से
पांच पांच हजार की एक एक आंख बताने से
नाक भी ना कटी इनकी यह अनमेल व्याह रचाने से
बकरी के गले ऊंट ऊंट के गले बकरी लटकाने से
नाक भी ना कटी इन की छुप छुप के गर्भ गिराने से
कोठे और दालान दुवारी कब्रस्थान बनाने से
नाक भी ना कटी इनकी नीचों के संग भगजाने से
या नीचों के हमल को लेकर कुयें में जान गंवाने से
नाक भी न कटी इनकी नित पुलिस के आने जाने से
सरे बाजार हमल किसका है यह इजहार लिखाने से
नाक भी न कटी इनकी इनके रण्डी बन जाने से
आप बसे नीचे इनको चौबारे पर बिठलाने से
जिसके जरिये नक्कू पन्थ का जगत जंवाई हो ॥नकुवों।

यानी इनका नेम है एक विधवा व्याह बचाते रहो
फिर यह नाक नहीं कटती चाहै सौ २ पाप कमाते रहो
लेकिन नक्कू पन्थ यह तेरी बहुत बड़ी नादानी है
तीन करोड़ विधवाओं के निस दिन बहै नैन से पानी है
यह पानी पानी नहीं तेरे नाश की खास निसानी है
जिसके बताने के लिये अगली कड़ी बनाई है ॥नकुओं॥
ना राजा ना रंक और न छिपी पुजारी पंडों से
जब कोई किसी तरह से न माने तो फिर माने डंडे से।
धर्म के पंजे छूट जाय तो आवे ठिकाने डंडे से
खेती करे किसान बैल को चलना आवे डंडे से
चार अंगुल लकड़ी पर बकरा पांव जमावे डंडे से
सास का पानी भरती चुहिया चित्त चुरावै डंडे से
बैठ पींजरे सिंह मनुष्य को शीस झुकावे डंडे से
राजकुमार सवार चतुर तुरियों को नचावे डंडे से
माता पालन करे पुत्र फिर सुख पहुंचावे डंडे से
छोटे से छोटे और बड़े से बड़े सब शिक्षा पावें डंडे से
कहे से माने मनुष्य मूर्ख की समझ में आवे डंडे से
"तेजसिंह" बिन डंडे करेना कोई भी सुनवाई है ॥नकुओं॥

(१०)

बुज़दिली छोड़ के मैदान में आना होगा
हिन्दुओं अब तुम्हें कुछ करके दिखाना होगा
धर्म से बढ़ के नहीं कोई चीज दुनियां में

जान दे कर भी तुम्हें धर्म बचाना होगा
मर मिटो शौक से पर धर्म न छोड़ो भाई ।
बे जबानों की तरह मार न खाना होगा
ख्वाबे गफलत से उठो भाइयो आंखें खोलो
संगठनकौम का मजबूत बनाना होगा
जो अपनी कौम न इस वक्त उठेगी सरयू
तो हिन्दुओं का न दुनियां में ठिकाना होगा

(११)

खुदाया कैसी मुसीबतों में यह हिन्दवाले पड़े हुए हैं
कदम कदम पर हमारी खातर सितम के छाले पड़े हुए हैं
हमारे मेहमान बन कर वह जुल्म करने लगे हमीं पर
गजब है अपने मकान वाले मकान से बाहर खड़े हुए हैं
सिरों पै आफत पड़ी हुई है गले में खंजर अड़े हुए हैं
दिलों में नश्तर चुभे हुए हैं जिगर में छाले पड़े हुए हैं
हजारों बच्चों से बाप बिछुड़े वह तेगे किस्मत के होके टुकड़े
सुहागनों के सुहाग उजड़े घरों में ताले पड़े हुए हैं
हवा जमाने की बिगड़ी आकर वह जुल्म करने लगे सरासर
सुनायें फरियाद किसको जाकर जबां पै छाले पड़े हुए हैं

(१२)

हुआ ध्यान में ईश्वर के जो मगन
उसे जोई क्लेश लगा न रहा

जब ज्ञान की गंगा में नहाया
तो मन में मैल जरा न रहा
परमात्मा को जब आत्मा में
लिया देख ज्ञान की आंखों से
प्रकाश हुआ मन में उसके
कोई भेद उससे छिपा न रहा
पुरुषार्थ ही इस दुनियां में
हर कामना पूरी करता है
मन चाहा सुख उसने पाया
जो आलसी बन के पड़ा न रहा
दुखदाई है सब शत्रु हैं
यह विषय हैं जितने दुखिया के
वही पार हुआ भव सागर से
जो जाल में इनके फंसा न रहा
यह वेद विरुद्ध जब मत फैला
पत्थरकी पूजा जारी हुई
जब वेद की विद्या लोप हुई
तो ज्ञान का पांव जमा न रहा
यहां बड़े बड़े महाराज हुए बलवान हुए विद्वान् हुए
पर मौत के पंजे से केवल, संसार में कोई बचा न रहा

भजन अछूतोद्धार का

(१३)

हिन्दुओं तुम इन अछूतों को सताना छोड़ दो
इन बिचारों पर सितमगर सितमढाना छोड़दो
राम के प्यारे हैं वह, और कृष्ण के सेवक है वह
नीचे कुछ भक्तों को तुम नाहक दबाना छोड़ दो
जुल्म ढाते ही रहो तुम, यह सदा सहते रहे
अपने ही अंग अपने हाथों से कटाना छोड़दो
धर्म पर कायम हैं वह और दम मुहब्बत का भरें
बावफा भाइयों को तुम अबतो रुलाना छोड़ दो
ताक में बैठे हैं उनके पादरी और मौलवी
देखते सुनते हुए तुम घर लुटाना छोड़ दो
रहे हैं हिन्दू जब तक; तुम देखो नफरत से उन्हें
चोटी कट जाने पर तुम इनको डराना छोढ़ दो
गोद कुत्तों को खिलाओ जुल्म इन्सां पर करो
गालियां तुम इन बेचारों को सुनाना छोड़ दो
दलितों का उद्धार है इक पुण्य कारज महान्
इन पर जोरों जबर के तेगें चलाना छोड़ दो

(१४)

यही दिन हैं दुआ लेलो विचारे इन अछूतों से
अरज है ब्राह्मणों से वैश्यों से और राजपूतों से
यह जाति मौत के मुंहमें बड़ी तेजी से जाती है

बचालो शूरबीरों अवतो इसको यमके दूतों से
मुसीबत जब कभी आई कहीं इस हिन्दू जातिपर
नहीं बैठा गया खामोश घरमें इन सपूतों से
मुहब्बत प्रेम से इनको लगा लो अब गले अपने
करो न खौफ छुआ छूत के बेजान भूतों से
तुम्हारे पांव होकर भी फिरें क्यों ठोकरें खाते
अरज़ है मुअद्दबाना मेरी ऋषियों के सपूतों से
जो जैसा करता है भरता वैसा चन्द रौशन है
सताओगे इन्हें तुम तड़प जाओगे जूतों से

(१५)

तुम्हारे जुल्म की हम तुमसे ही फरयाद करते हैं
मुहब्बतका नया पहलू यह इक इजाद करते हैं
फटा जाता है दिल रंजो अलम से हम गरीबोंका
मज़ालिम को तुम्हारे जब कभी हम याद करते हैं
हमें बरबाद करनेके निकाले सैकड़ों पहलू
मगर हम हैं कि हर जुल्मों सितम पर स्वाद करते हैं
न कैसे हौसला गैरों को ठुकराने का हो हम पर
हमारे अपने भाई हम पै जब बेदाद करते हैं
हमें करते हैं शामिल हिन्दुओंमें अपने मतलब से
फरीकों के मुकाबिल पेश जब तायदाद करते हैं
नहीं हम एश भी करते आये हैं कुछ मुहब्बतसे
हमारे आपको मजबूर कुछ इतबार करते हैं

वर्गना आपको साया तलकसे अपने नफरत है
मगर कुत्तों को लेकर गोदमें दिलशाद करते हैं

(१६)

ख्वाबे गफलत से जगाया ऋषिने आन कर
सागरे अमृत पिलाया ऋषिने आन कर
छा गयी थी मुर्दनी हा सारे भारतवर्षमें
फिर उसे जिन्दा कराया है ऋषिने आनकर
हो गया था खून ठंडा जो ऋषि सन्तानका
जोश फिर खूं में दिखाया है ऋषिने आनकर
वेद विद्या छिप गई थी कोई भी रक्षक न था
वेद जर्मन से मंगाया है ऋषि ने आनकर
जहरका प्याला पिया पर आह तक मुंह से न की
शान्तिका राज्य पाया है ऋषि ने आन कर
कर सकें क्यों कर बयां अहसान उस स्वामीके हम
फैज का दरिया बहाया है ऋषिने आनकर

(१७)

हिन्दुवनकी नया डोबी जायरे जवानो हो।
नदियाके चौपाट पड़े हैं हो, धरती अम्बर रूठ
रहे हैं हो, हिन्दू सारे सोय रहे हैं हो, गफलतमें सब
खोए रहे हैं हो, नइया है मझधार जवानों हो
कोसों है अबदूर किनारा हो, क्या करे आर्य्य समाज

विचारा हो, क्या करें नइया खेवन हारा हो,
काम न आवे पतवार जवानों हो।
सारी दुनियां है मदमाती हो, कोई नहीं है अपना
संगी व साथी हो, मतलबके सब यार जवानों हो।

(१८)

सारी दुनियां में दिन हिन्द में रात है
हिन्द वालों बताओ यह क्या बात है
बच्चों बुड्ढों की शादी रचाकर कहो
वहशवे ऐश या मातमी रात है
गैर मुल्कों में सारे ही मिल जुल रहे
हिन्द वालों के यहां तो छुआ छात है
वेद मारग पै सारे यदि चलपड़ो
फिर तो जानो कि भारत प्रभात
देखते क्या हो ऐ नौ जवानों
उठो कौम की आबरू आपके हाथ
धर्म वैदिक ज़माने से मिटने न दो
वेद का ज्ञान ईश्वर की सौगात है
हम अमर हैं जहां से मिटेगें नहीं
जो मिटाये हमें किसकी औक़ात है
क्या हुआ गर कोई अपना साथी नहीं
साथ हैं कुल जमाना जो साथ है

है मुसाफिर खतावार तो क्या हुआ
बे खता तो फकत एक ही जात है ।

आरती

जय जगदीश हरे जय जगदीश हरे
भक्त जनन के संकट क्षण में दूर करे
जो ध्यावे फल पावे दुख विनशे मनका
सुख सम्पति घर आवे कष्ट मिटे तनका
मात पिता तुम मेरे शरण गहूं किसकी
तुम बिन और न दूजा आस करूं जिसकी
तुम पूर्ण परमात्मा तुम अन्तर्य्यामी
पारब्रह्म प्रमेश्वर तुम सबके स्वामी
तुम करूणा के सागर तुम पालन कर्ता
दीन दयाल कृपालु कृपा करो भर्त्ता
तुम हो एक अगोचर सब प्राणपति
शुद्ध करो मम हृदय धर्म में होवे गति
दीन बन्धु दुःख हर्ता तुम ठाकुर मेरे
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ा तेरे
बिषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ सन्तन की सेवा

इति

मुद्रक-बाबू हरिपद दत्त द्वारा यूरेका प्रिंटिंग वर्क्स, गोदौलिया, बनारस ।

॥ ओ३म् ॥

आर्य्यसमाज के नियम ।

१—सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सब का आदि मूल परमेश्वर है ।

२—ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान्, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है । उसी की उपासना करनी योग्य है ।

३—वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है । वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्य्यों का परम धर्म है ।

४—सत्य ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये ।

५—सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिये ।

६—संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना ।

७—सब से प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार, यथा योग्य वर्त्तना चाहिये ।

८—अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये ।

९—प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये ।

१०—सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिये और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहें ।